श्री नृसिंह द्वादशनाम स्तोत्रं

अस्य श्रीनृसिंह द्वादशनामस्तोत्र महामंत्रस्य
वेदव्यासो भगवान् ऋषिः
अनुष्टुप्छंदः
लक्ष्मीनृसिंहो देवता
श्रीनृसिंह प्रीत्यर्थे विनियोगः |

ध्यानं |
स्वभक्त पक्षपातेन तद्विपक्ष विदारणम् |
नृसिंहमद्भुतं वंदे परमानंद विग्रहम् | |
स्तोत्रं |
प्रथमं तु महाज्वालो द्वितीयं तूग्रकेसरी |
तृतीयं वज्रदंष्ट्रश्च चतुर्थं तु विशारदः | | 1 | |

पंचमं नारसिंहश्च षष्ठः कश्यपमर्दनः |
सप्तमो यातुहंता च अष्टमो देववल्लभः | | 2| |

नव प्रह्लादवरदो दशमोऽनंतहस्तकः |
एकादशो महारुद्रो द्वादशो दारुणस्तथा | | 3 | |

द्वादशैतानि नामानि नृसिंहस्य महात्मनः |
मंत्रराजेति विख्यातं सर्वपापविनाशनम् | | 4 | |

क्षयापस्मारकुष्ठादि तापज्वरनिवारणम् |
राजद्वारे महाघोरे संग्रामे च जलांतरे | | 5 | |

गिरिगह्वार आरण्ये व्याघ्रचोरामयादिषु |
रणे च मरणे चैव शमदं परमं शुभम् | | 6 | |

शतमावर्तयेद्यस्तु मुच्यते व्याधिबंधनात् |
आवर्तयेत्सहस्रं तु लभते वांछितं फलम् | | 7 | |

इति श्री नृसिंह द्वादशनाम स्तोत्रं |